THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

रामायण में निहित जीवन–मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजीव कुमार उपाध्याय,
शोधार्थी
शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह
सहारनपुर

डॉ. सचिन कुमार,
सह–पर्यवेक्षक
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
इतिहास विभागाध्यक्ष,
डी. ए. वी. कॉलेज, मुजफ्फरनगर

सारांश

रामायण के जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता का विषय केवल आज का नहीं है बल्कि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण को रचने के बाद से ही हर युग ने अपने युग के अनुरूप रामायण में जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता की तलाश की है। 20 शताब्दियों का इतिहास तो हमारे पास है ही। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना के बाद भारत और भारत की सीमाओं से भी बाहर प्रत्येक शताब्दी में राम कथाएं अपने–अपने ढंग से लिखी जाती रही हैं, किन्तु उन सभी का उद्देश्य केवल रामायण के जीवन मूल्यों की स्थापना ही रहा। ऐसे में आज जब प्रौद्योगिकी क्रांति के बीच जब युवाओं के समक्ष प्रतिदिन नई–नई चुनौतियां सामने आ रही हैं, तो फिर से प्रश्न उठता है कि क्या रामायण के जीवन मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं और यदि हैं तो उनमें हमारे लिए कौन से तत्व, किस प्रकार हमारे उपयोगी हो सकते हैं। रामायण की प्रत्येक शिक्षा मानव–जीवन को बदलने वाली और जीवन को नया दृष्टिकोण देने वाली है। उदासीन को उत्साह की ओर, पराजित को जीत की ओर ले जाने वाली हैं। आज से नहीं बल्कि सदियों से मनुष्य जब भी हताशा–निराशा से घिरा है तब ही रामायण एक सम्बल बन कर उसके साथ खड़ी हो गई। भारत के साथ–साथ दुनिया भर में रामायण के विविध स्वरूपों का मिलना रामायण और श्रीराम जी की स्वीकार्यता का स्पष्ट प्रमाण है। मुगलकाल में जब भारतीय समाज अपने धर्म से विमुख होने लगा और बेहद हताश होकर उदासीनता के अंधकूप में जाता दिखाई दे रहा था उसी समय गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम जी के व्यक्तित्व को लेकर रामचरितमानस जैसा एक ग्रंथ गढ़ दिया कि फिर से भारतीयों को एक संजीवनी मिली और वे जय श्रीराम कहकर उठ खड़े हुए।

मुख्य बिंदु : *रामायण, जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता, महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण*

प्रस्तावना

सदियों से हमारी सुबह राम–राम से शुरू होती आई है। भले ही शहर में एक–दूसरे को अभिवादन के तौर–तरीके बदल गए हों लेकिन गांवों में आज भी **राम–राम** का सम्बोधन सुनने को मिलता है। जीवन के प्रारम्भ से और अंतिम समय तक – **राम नाम सत्य है** के साथ राम का जुड़ा होना यह तय करता है कि राम हमारे जीवन में समाए हुए हैं। वे हमारे दुख–सुख के साथी हैं। हम सुख में हों या दुख में श्रीराम बराबर

हमारे साथ बने होते हैं। मैंने गत वर्षों में अध्ययन के माध्यम से भारतीय जीवन–दर्शन के उस पक्ष को समझने का प्रयास किया जहाँ हम ज्ञात– अज्ञात और चाहे–अनचाहे श्रीराम को समर्पित हो जाते हैं। प्रश्न मन में आया कि क्या सदियों से हमारे पूर्वजों को सम्बल देने वाला चिंतन हमारे लिए प्रासंगिक नहीं रहा ?, ऐसा नहीं है, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि सदियों से रहा। बस उस चिंतन को नए दृष्टिकोण और नई आवश्यकताओं के हिसाब से देखने की आवश्यकता है। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में जब शिक्षाओं और उक्तियों का अध्ययन किया तो एक कमाल की बात मिली कि यहाँ न केवल वे पात्र शिक्षा प्रदान करते दिखाई देते हैं, जो अपने चरित्र और व्यक्तित्व से हमें प्रेरित करते रहे हैं बल्कि उन पात्रों ने भी सुंदर या सीख देने वाले विचार व्यक्त किए हैं जिन्हें हम पूर्णतया नकारात्मक समझते हैं।

आज हम पाते हैं कि युवा हतोत्साहित होता जा रहा है। उसे दिन–प्रतिदिन बेहतर होने की इच्छा है, वह हो भी रहा है लेकिन फिर भी संतुष्ट नहीं है। केवल 30 वर्ष पहले की तुलना करें तो आज हमारे पास अधिक सुख–सुविधाएं और बेहतर ज्ञान–विज्ञान हैं लेकिन हम संतुष्ट नहीं है। इसका साफ अर्थ है कि सुख–सुविधाएं या अधिक धन हो जाना जीवन में आनंद या खुशी देने का कोई निश्चित साधन नहीं है। पहले हम अधिक धन को कमाने के लिए शरीर को दांव पर लगाते हैं और फिर शरीर को बचाने के लिए धन को दांव पर लगा देते हैं। मानव जीवन में खुशी के दो पल के लिए लगातार भटक रहा है किंतु खुशी उससे कोसों दूर होती जा रही है। आनंद प्रदान करने वाली सफलता तो कोसों दूर है। जिस प्रकार एक बीमार को औषधि की आवश्यकता होती है, हताश मानव को भी अपनी मानसिक निर्बलता के लिए रामायण जी के ज्ञान जैसी औषधि की आवश्यकता है।

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण जी में ऐसे श्लोकों का चयन किया है जो मानव–जीवन का श्रेष्ठ मार्गदर्शन करते हैं। यहाँ कभी सफल राजा होने का पाठ देखने को मिलता है, कभी मानव–जीवन की कठिन स्थितियों में उनसे निपटने की शिक्षा प्राप्त होती है। साथ ही साथ मानव के स्वभाव, मोह से विरक्ति, स्त्री के कर्तव्य, भाई–भाभी के प्रति कर्तव्य, सलाह लेने का महत्व, विद्वानों के संसर्ग, न्यायप्रियता, धर्म–अर्थ का संतुलन, शासक के गुण, जीवन के सूत्र, समय का महत्व, जीवन की नश्वरता, लोक व्यवहार, पुण्य–कर्म का महत्व, स्वयं कार्य करने, नीति का पालन, धर्म का महत्व, धैर्य का आश्रय, शासक की युक्तियां, लक्ष्य में उत्साह का महत्व, मनोभाव समझने की कला, शिक्षा का महत्व, बुद्धिबल की आवश्यकता, गुणवान मित्र का होना, लोकाचार, व्यवहार में समतुल्यता, कृतघ्नता का त्याग, संसार में आदर के कारण, उपकार किया जाना, कार्य सिद्धि के सद्गुण, कर्म का महत्व, विषाद से दूरी, संशय से मुक्ति, शौर्य से अभीष्ट प्राप्ति, उपाय कुशलता, सच्चा हितैषी, सदाचारी पुरुष आदि विषयों पर अनेक शिक्षाओं का साक्षात्कार हमें रामायण में होता है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

जीवन में पुरुषार्थ का महत्व

दैवं पुरुषकारेण यः समर्थः प्रबाधितुम्।
न दैवेन विपन्नार्थः पुरुषः सोऽवसीदति।।
– अयोध्याकाण्ड, सर्ग – 23, श्लोक – 17

– जो अपने पुरुषार्थ से दैव (भाग्य) को दबा देने की शक्ति रखता है, वह दैव के द्वारा अपने कार्य में बाधा पड़ने पर खेद नहीं करता अर्थात् हतोत्साहित होकर नहीं बैठता।

वर्तमान प्रासंगिकता – मनुष्य ईश्वर की अमूल्य कृति है। कई बार मनुष्य के जीवन में कठिन से कठिन चुनौतियां आ जाती हैं। कई बार हमें लगता है कि दुर्भाग्य है कि हमारा पीछा ही नहीं छोड़ता। ऐसे में अनेक लोग इसे नियति मानकर बैठ जाते हैं किंतु पुरूषार्थी पुरूष अपने पौरूष से अपने दुर्भाग्य के लिए चुनौती बनकर अपना सौभाग्य गढ़ लेते हैं। यही सच्चा पुरूषार्थ है।

समय का सम्मान आवश्यक

अत्येति रजनी या तु सा न प्रतिनिवर्तते।
यात्येव यमुना पूर्ण समुद्रमुदकार्णवम्।।
– अयोध्याकाण्ड, सर्ग– 105, श्लोक – 19

– जो रात बीत जाती है, वह लौटकर फिर नहीं आती है। जैसे यमुना जल से भरे हुए समुद्र की ओर जाती ही है, उधर से लौटती नहीं।

वर्तमान प्रासंगिकता – जीवन में समय का सम्मान करना बहुत आवश्यक है। जो व्यक्ति समय का सम्मान नहीं करता है, तो समय भी उसका सम्मान नहीं करता है। किसी भी कार्य को भविष्य के लिए बचाकर न रखें, प्रयास करें उसे समय मिलते ही कर डालें क्या पता आने वाले समय में कितनी नई चुनौतियां आपका सामना कर रही हों। थोड़े से साहस, थोड़े से प्रयास और थोड़े से प्रबोधन से हम अपने समय का सदुपयोग कर सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आचरण से होती है मनुष्य की पहचान

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाशुचिम्।।
– अयोध्याकाण्ड, सर्ग– 109, श्लोक – 1

– मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कार्य अथवा पवित्र है या अपवित्र।

वर्तमान प्रासंगिकता – हमारा आचरण हमारे सामाजिक जीवन का सच्चा आधार कार्ड है। जब हम समाज में किसी भी प्रकार का अच्छा या बुरा व्यवहार करते हैं तो उससे लोग हमारे परिवार, जाति, संस्कार आदि का अनुमान कर लेते हैं। ऐसे में मनुष्य को चाहिए कि वह लोक में ऐसा व्यवहार करे जो कभी भी उसके या उसके परिवार के लिए किसी कठिनाई का कारण न बनें। अब तो समाज सोशल मीडिया पर की गई गतिविधियों को देखकर भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आंकलन करने लगा है। हमारा अच्छा आचरण ही हमारी सच्ची पहचान बन सकता है।

क्षमतानुसार प्रयास सफलता में सहायक

स भारः सौम्य भर्तव्यो यो नरं नावसादयेत्।
तदन्नमपि भोक्तव्यं जीर्यते यदनामयम्।।

– अरण्यकाण्ड, सर्ग – 50, श्लोक – 18

–पुरुष को उतना ही बोझ उठाना चाहिए जो उसे शिथिल न कर दे और उसी अन्न का भोजन करना चाहिए जो पेट में जाकर पच जाए, रोग न पैदा करे।

वर्तमान प्रासंगिकता – प्रत्येक व्यक्ति की एक क्षमता होती है। कई बार ऐसा होता है कि हम अपनी ताकत से अधिक कार्य को करने का प्रयास करते हैं और हम असफल हो जाते हैं, इसका कारण है कि हमने अपनी क्षमता और कार्य दोनों के बीच अंतर का सही आंकलन नहीं किया था। हम जब भी किसी लक्ष्य को केंद्र में रखें तो अपने वर्तमान सामर्थ्य, वहां तक पहुंचने में उपलब्ध साधन और अपनी बढ़ सकने वाली संभावित क्षमता का आंकलन अवश्य एक बार कर लें, तभी लक्ष्य का निर्धारण करें। यदि हम इस प्रकार का आंकलन कर लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाएंगें तो निःसंदेह सफलता मिलेगी।

स्थिर प्रज्ञता से तय होते हैं सम्बंध

सर्वथा सुकरं मित्रं दुष्करं प्रतिपालनम्।
अनित्यत्वात् तु चित्तानां प्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते।।

– किष्किंधाकाण्ड, सर्ग – 32, श्लोक – 7

– किसी को मित्र बना लेना सर्वथा आसान है परंतु उस मैत्री का पालना या निभाना बहुत ही कठिन है। क्योंकि मन का भाव सदा एक–सा नहीं रहता। किसी के द्वारा थोड़ी–सी भी चुगली कर दिए जाने पर प्रेम में अंतर आ जाता है।

वर्तमान प्रासंगिकता – मित्रता के सम्बंधों को निभाने के लिए मन में स्थिरता और विश्वास का होना बहुत आवश्यक है। मन में आए विकारों से रहित होकर ही हम मित्रता धर्म का निर्वहन कर सकते हैं। सम्बंधों को चलाने के लिए हमें छोटी–छोटी बातों को विस्मृत करना होता है, तभी सम्बंध बड़े बन सकते हैं।

कार्य की सिद्धि के लिए आवश्यक सद्गुण

अनिर्वेदं च दाक्ष्यं च मनसश्चापराजयम्।
कार्यसिद्धिकराण्याहुस्तस्मादेतद् ब्रवीम्यहम्।।

– किष्किंधाकाण्ड, सर्ग – 49, श्लोक – 6

– उत्साह, सामर्थ्य और मन से पराजित न होना – ये कार्य सिद्धि कराने वाले सद्गुण कहे गए हैं, इसलिए मैं आप लोगों से यह बात कह रहा हूँ।

वर्तमान प्रासंगिकता – हमारे जीवन में कोई भी लक्ष्य क्यों न हो, हमारे समक्ष कोई भी चुनौती क्यों न हों अंगद द्वारा बताया गया यह सिद्धि मंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम लक्ष्य के प्रति हमारे भीतर उत्साह होना चाहिए क्योंकि उत्साह ही यह तय करेगा कि कितने साहस के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं। दूसरा है सामर्थ्य, उत्साह के साथ–साथ हमारा समर्थ होना भी आवश्यक है। व्यक्ति अपने बल के आधार पर ही किसी कार्य को कर सकता है। समुद्र को देखकर चिंतित रामादल में वयोवृद्ध जामवंत ने हनुमान जी को ही क्यों कहा था – 'का चुप साधि रहा बलवाना', क्योंकि जामवंत जानते थे कि उत्साह तो सभी वानरों में है किंतु समुद्र को उड़कर पार करने का सामर्थ्य केवल और केवल हनुमान जी में है। ऐसे में हमारे समक्ष लक्ष्य कोई भी हो उत्साह के साथ–साथ हमारे भी सामर्थ्य या फिर सामर्थ्य को उस लक्ष्य के हिसाब से बढ़ाने की क्षमता भी होनी चाहिए। लक्ष्य सिद्धि के लिए तीसरी महत्वपूर्ण बात है कि मन से पराजित न होना। कहा भी है कि 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'। जो व्यक्ति कठिन चुनौतियों में भी मन से पराजित नहीं होता है, एक न एक दिन सफलता अवश्य ही उसके पैर छूती है।

जीवन में सफलता के लिए चार सिद्धांत

यस्य त्वेतानि चत्वारि वानरेन्द्र यथा तव।
धृतिर्दृष्टिर्मतिर्दाक्ष्यं स कर्मसु न सीदति।।

– सुंदरकाण्ड, सर्ग – 1, श्लोक – 201

–जिस पुरुष में आपके समान धैर्य, दृष्टिकोण, बुद्धि और कुशलता– ये चार गुण होते हैं, उसे अपने कार्य में कभी भी असफलता नहीं प्राप्त होती।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

वर्तमान प्रासंगिकता – रामायण की यही विशिष्टता है कि यहां मानव के व्यक्तित्व से जुड़ी शिक्षाएं कभी वानर देते हैं, कभी पर्वत और कभी पशु–पक्षी भी। महर्षि वाल्मीकि जी को जहां भी लगा कि मानव को ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए, उन्होंने उस स्थिति के निकटतम उपमान पर प्रयोग कर लोक व्यवहार और व्यक्तित्व विकास की शिक्षा दी हैं। यहां हनुमान जी की सफलता पर आकाश में विचरने वाले पक्षी ही बोल पड़ते हैं। वे कहते हैं कि धैर्य को धारण करना, समुचित दृष्टि से स्थिति को परखना, बुद्धि का उपयोग करना और स्थिति से निकल आने की कुशलता ये हमें प्रत्येक सफलता को प्राप्त करने में हमारे सहयोगी होती हैं। रामायण काल में लिखी गई ये शिक्षाएं आज भी पेशेन्स, एंगल ऑफ विजन, ब्रेन और स्किल के रूप में प्रत्येक मोटिवेशनल स्पीकर अपने लेक्चर में शामिल रखते हैं, यही रामायण जी की प्रासंगिकता भी है। हमारी अनेक चिंताओं का अर्थ रामायण की शिक्षाओं में छिपा हुआ है।

कठिन समय में अपने लिए अर्जित करें प्रेरणा

अनिर्वेदः श्रियो मूलमनिर्वेदः परं सुखम्।
भूयस्तत्र विचेष्यामि न यत्र विचयः कृतः।।
अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेषु प्रवर्तकः।
करोति सफलं जन्तोः कर्म यच्च करोति सः।।

– सुंदरकाण्ड, सर्ग – 12, श्लोक – 10,11

– हताश न होकर उत्साह बनाए रखना ही सम्पत्ति का मूल कारण है। उत्साह ही परम सुख का हेतु है, अतः मैं पुनः उन स्थानों पर खोज करुँगा, जहाँ अब तक तलाश नहीं की है। उत्साह ही हमेशा प्राणियों को सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त करता है। उत्साह उन्हें उस कार्य में सफलता प्रदान करता है जो वे करते हैं।

वर्तमान प्रासंगिकता –ऐसा नहीं है कि प्रत्येक स्थिति में आपके साथ आपके माता–पिता, गुरूजन, मित्र या कोई अन्य शुभचिंतक उपस्थित ही हो और आपका मार्गदर्शन कर दे। जीवन में ऐसे अनेक समय आते हैं जब व्यक्ति के पास कोई सलाहकार या सहयोगी नहीं होता, ऐसे में उसे स्वयं ही निर्णय लेकर आगे बढ़ना होता है। यहां हनुमान जी कठिन चुनौती सामने आने पर स्वयं को प्रेरित करते दिखाई दे रहे हैं। यदि हमें अपने जीवन पथ पर सफलता अर्जित करनी है तो हमें यह मूल सिद्धांत सीखना ही होगा। जब भी कठिन चुनौती हमारे सामने हो तो हम स्वयं से बात करें, स्वयं को प्रेरित करें और स्वयं को अपने सामर्थ्य का अनुमान कराएं। यदि आपने स्वयं को प्रेरित कर लिया तो आपको कभी किसी सहारे की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। आप एक अनावश्यक सुरक्षा खोल में रहकर जीना छोड़ देंगे और सफलता आपका स्वागत करेगी।

यदि अगर – मगर तो फिर कठिन डगर

असत्यानि च युद्धानि संशयो मे न रोचते।
कश्च निःसंशयं कार्यं कुर्यात् प्राज्ञः ससंशयम्।।

– सुंदरकाण्ड, सर्ग – 30, श्लोक – 35

– युद्ध अनिश्चात्मक होता है और मुझे संशययुक्त कार्य प्रिय नहीं है। कौन ऐसा बुद्धिमान होगा, जो संशय रहित कार्य को संशय युक्त बनाना चाहेगा।

वर्तमान प्रासंगिकता – यदि हम अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं तो हमें अगर – मगर से बाहर निकलना होगा। संशय जीवन को कठिन कर देता है। यदि हम प्रत्येक बात में संशयी हैं तो यह हमारी निर्णय शक्ति पर भी प्रश्नचिन्ह है। संशयी व्यक्ति अपनी निर्णय शक्ति खो देता है, जिससे कि वह अपने लक्ष्य में असफल हो जाता है। कई बार हम स्वयं ही सरल निर्णय को अपने कुर्तकों के कारण संशय व्यक्त कर कठिन बना देते हैं।

यथा समय, यथाक्रम से कार्य का सम्पादन आवश्यक

यः पश्चात् पूर्वकार्याणि कर्माण्यभिचिकीर्षति।
पूर्वे चापरकार्याणि स न वेद नयानयौ।।

– युद्धकाण्ड, सर्ग – 11, श्लोक – 32

– जो पहले करने योग्य कार्य को बाद में करना चाहता है और बाद में करने योग्य कार्य को पहले ही कर डालता है, वह नीति और अनीति को नहीं जानता।

वर्तमान प्रासंगिकता – जीवन में प्रत्येक कार्य का एक समय होता है और प्रत्येक कार्य का एक क्रम होता है। सही समय पर और क्रम के अनुसार किए गए कार्यों की ही हमारे शास्त्रों द्वारा प्रशंसा की गई है। भारतीय जीवन में चार आश्रमों की व्यवस्था भी पूर्वकाल में इसीलिए की गई थी। सही आयु में क्रमानुसार आने वाले आश्रम का अनुसरण ही भारतीय परम्परा का हिस्सा रहा है। यदि आयु ब्रह्मचर्य की है तो किसी बालक को गृहस्थ आश्रम से जो नहीं जोड़ा जा सकता। ऐसे ही हमें भी अपने जीवन में बुद्धि का अनुशरण कर अपनी प्राथमिकताएं तय करनी चाहिए। पहले करने योग्य कार्य को पहले ही करना सही रहता है और बाद में करने योग्य कार्य को बाद में करना। यही नीति का मार्ग है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

संदर्भ ग्रंथ

– **श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण** – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)
प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

– **रामायण–महाभारत – काल, इतिहास, सिद्धांत**, लेखक – वासुदेव पोद्दार
प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2016, चतुर्थ संस्करण

– **रामायण का आचार दर्शन**, लेखक – अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव
प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2012, तृतीय संस्करण

– **वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना**, लेखक – डॉ वृजेश
प्रकाशक – नाग पब्लिशर्स, प्रकाशन वर्ष –

– **रामकथा नवनीत**, लेखक – पांडुरंग राव
प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2016, द्वितीय संस्करण

– **भारतीय भाषाओं में रामकथा, आरण्यक**, सम्पादक – डॉ अर्जुनदास केसरी
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2016

– **जनजातीय जीवन में राम**, सम्पादक – वसन्त निरगुणे
प्रकाशक – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2017

– **रामायण कालीन संस्कृति**, लेखक – डॉ शांतिकुमार नानूराम व्यास
प्रकाशक – सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 1965

– **वाल्मिकी भारतीय साहित्य के निर्माता**, लेखक – इलपावुलूरि पाण्डुरंगराव
प्रकाशक – साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2015

– **वाल्मीकि के राम और रामायण**, लेखक – केशवदेव एडवोकेट
प्रकाशक – भारतीय सांस्कृतिक विद्या भक्ति संस्थान, मथुरा, प्रकाशन वर्ष – 2021

– **राम – ऐतिहासिकता एवं वन गमन मार्ग**, लेखक – डॉ जीके अग्निहोत्री
प्रकाशक – राधा पब्लिकेशन्स , प्रकाशन वर्ष – 2020, द्वितीय संस्करण

– **नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता**, सम्पादक – डॉ – सुरेन्द्र सिंह नेगी

प्रकाशक – आदित्य पब्लिशर्स, बीना (मप्र), प्रकाशन वर्ष – 2000

– **रामायण महातीर्थम्**, लेखक – कुबेरनाथ राय
प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष – 2011, चतुर्थ संस्करण